Que:- रोजेनबर्ग के अभिवृत्ति-परिवर्तन सिद्धांत का मूल्यांकन करें।
Evaluate Rosenberg's theary of attitude change

Ans:- मनोवृत्ति तथा मनोवृत्ति परिवर्तन की अवधारणा है रोजेनबर्ग ने एक सिद्धांत का प्रतिपादन किया है। जिसे भावात्मक-संज्ञानात्मक संगति सिद्धांत कहते हैं। इसे ~~सिद्धांत~~ सिद्धान्त का प्रतिपादन हाइडर (Heider) के संतुलन सिद्धांत (balance theary) की पृष्ठभूमि में किया गया है।

यह सिद्धान्त ~~रोजेनबर्ग~~ मनोवृत्ति के तीन घटक अर्थात संज्ञानात्मक (Cognitive), भावात्मक (affective) तथा व्यवहारात्मक (behavioural) घटक को स्वीकार करता है। संज्ञानात्मक घटक का तात्पर्य मनोवृत्ति-वस्तु के संबंधित विचार से है। भावात्मक घटक का तात्पर्य उस वस्तु के संबंधित सुखद या दुखद भाव से है तथा व्यवहारात्मक घटक का तात्पर्य उस वस्तु के प्रति किये जाने वाले व्यवहार या क्रिया से है। लेकिन ~~यह~~ यह सिद्धांत मनोवृत्ति-दृढ़ता या मनोवृत्ति परिवर्तन में केवल पहले दो घटकों (संज्ञानात्मक तथा भावात्मक) को प्रधान मानता है। इस सिद्धांत के अनुसार भावात्मक तथा संज्ञानात्मक घटकों के बीच जबतक संगति स्थापित रहती है तबतक मनोवृत्ति दृढ़ बनी रहती है और परिवर्तन की संभावना नहीं रहती है। लेकिन जब असंगति उत्पन्न हो जाती है तो उसमें ~~अस्थिरता~~ अस्थिरता हो जाने से परिवर्तन की संभावना बन जाती है।

~~रोजेनबर्ग~~ रोजनबर्ग के अनुसार मनोवृत्ति के

CLASSMATE
Date
Page

जीवाणुज - रोगजनक का पक्ष के परिवर्तन होने के कारण रोगजनक रोगजनक या पक्ष के होता है। कारण जीवाणुज रोगजनक में परिवर्तन होने पर रोगजनक के गुण अरोगजनक उत्पन्न हो जाती है और व्यक्ति तनाव महसूस करने लगता है। फलतः इस तनाव को दूर करने तथा रोगमुक्ति अथवा प्राप्त करने के लिए रोगजनक ~~रोगजनक~~ रोगजनक में परिवर्तन लाना आवश्यक हो जाता है। इस परिवर्तन के लाने मनोवृत्ति बदल जाती है। कारण रहना चाहिए कि रोगजनकों के पक्षों के अध्ययनों में यह पाया गया है। मनोवृत्ति के रोगजनक रोगजनक के परिवर्तन होने से जीवाणुज रोगजनक में परिवर्तन होता है।

दैनिक जीवन की सामाजिक घटनाओं को देखने से इस बात का प्रमाण मिलता है कि जीवाणुज रोगजनक बदलने से मनोवृत्ति बदलने की संभावना बन जाती है। यह बात व्यक्तिगत स्तर से लेकर व्यक्ति-व्यक्ति का सामाजिक तथा राष्ट्रीय स्तर पर भी सही प्रतीत होती है। इस सिद्धांत पर आलोचनात्मक दृष्टि डालने पर इसके गुणों तथा अवगुणों का संकेत मिलता है।

गुण:- (1) यह सिद्धांत मनोवृत्ति के संगठन तथा विघटन दोनों ही situation रूप से प्रकाश डालता है। इसके जीवाणुज तथा रोगजनक रोगजनकों की बीच संगति बनाए रखती है, तब तक मनोवृत्ति में संगठित रहती है और जब अरोगजनि उत्पन्न

होती है ले मनोवृत्ति अर्जनात्मक हो जाती है।

(2) सीजेनवर्ग के विचार से मनोवृत्ति परिवर्तन की मात्रा की व्याख्या भी संभव होती है। मनोवृत्ति के उसी दृष्टिकोण परिवर्तन होगा, जिस वस्तु आशयात्मक तथा संज्ञानात्मक संघटकों में अर्जनात्मक होगी। ~~सेलेन वर्ग~~ सीजेनवर्ग ने एक स्केल का निर्माण किया, जिसके द्वारा दोनों घटकों के बीच संबंध का मात्रात्मक मापन हो सका। इस विश्लेषण के बाद विचार दाइरर ने विचार संतुलन विचार के बजाय ~~बढ़~~ बढ़ विचार मनोवृत्ति परिवर्तन की मात्रा की व्याख्या नहीं कर पाया है।

(3) दाइरर तथा सीजेनवर्ग दोनों ने संज्ञानात्मक संतुलन या असंतुलन की दशा। मनोवृत्ति-स्थिरता तथा मनोवृत्ति अस्थिरता का आधार माना है। लेकिन ~~दाइरर~~ दाइरर के विचार के इस बात की व्याख्या नहीं हो पाती है कि एक परिस्थिति में संतुलन या असंतुलन की मात्रा कम होगी और इसका विपरीत प्रभाव मनोवृत्ति संगठन या परिवर्तन पर क्या पड़ेगा? परंतु सीजेनवर्ग का विचार इसकी व्याख्या करने में सफल है।

(4) इस सिद्धांत में वैयक्तिक मूल्य तंत्र के महत्व को माना गया है। सीजेनवर्ग के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति के एक मूल्य तंत्र होता है जो आशयात्मक संघटक के परिवर्तन से प्रभावित होता है।

(5) इस सिद्धांत की यह अभिधारणा सही प्रतीत होती है की मनोवृत्ति के तीनों संघटकों में आशयात्मक संघटक अधिक प्रभावशाली तथा सफल है। रोसिंग (Ellis) ने

classmate
Date
Page

कहा है कि एक रूप के सीखी गयी अनुक्रिया परिवर्तन से सामान्यतः उद्दीपक का साम्य अधिक होता है

दोष:- (1) इस सिद्धांत के अनुसार अनुक्रिया को उपेक्षा की गई है अनुक्रिया को बदलने में अभ्यास पर्याप्त होता है, जिसकी ओर से रोजमर्रा के जीवन में हम अनेक कार्य करते हैं पुरस्कार भी हम अभ्यास करके लगाते हैं तो उनके प्रति हमारी सामान्यतः अनुक्रिया के मात्रात्मक या दिशात्मक परिवर्तन होता है

(2) यह सिद्धांत केवल सामान्यतः तथा उद्दीपक की अनुरूपता को अनुक्रिया-परिवर्तन का कारण मानता है। लेकिन वास्तविकता यह है कि अनुक्रियाओं के निर्माण तथा परिवर्तन में बहुधा कारक परिस्थितियों का भी हाथ होता है।

(3) इस सिद्धांत में सीखने की क्रियाओं की उपेक्षा की गयी है अतः अनुक्रियाओं के अनुक्रिया-परिवर्तन में क्लासिकी (classical) तथा साधनात्मक (operant) अनुबन्धन के महत्व को प्रमाणित किया है। अनुसार केवल सामान्यतः - उद्दीपकात्मक अनुरूपता को एक मात्रात्मक अनुक्रिया-परिवर्तन की व्याख्या ~~किया गया है~~ प्रत्येक परिस्थिति में उचित नहीं है

(4) इस सिद्धांत के द्वारा किया गया है कि सामान्यतः उद्दीपक के बदलने से उद्दीपकात्मक उद्दीपक बदल जाता है लेकिन ऐसा ~~कभी~~ हमेशा नहीं होता है कभी कभी विशिष्ट के कारण उद्दीपकात्मक उद्दीपक में परिवर्तन होने से भी सामान्यतः उद्दीपक बदल जाता है।